इवर आर्मस्ट्रांग रिचर्ड्स

आई० ए० रिचर्ड्स

पाश्चात्य साहित्य शास्त्र में आधुनिक युग के आई० ए० रिचर्ड्स मौलिक सिद्धान्तों की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण योगदान है वे मनोविज्ञान-वेत्ता थे, और अर्थ विज्ञान में भी उनकी समान विशेषज्ञता थी। इसलिए उन्होंने साहित्य में व्यक्त मानवीय मूल्यों का आकलन किया। और इसके लिए उन्होंने यु और क को कसौटी बनाया। वे संवेगों के शास्त्री थे इसलिए उन्होंने मानसिक उपदेशों या भावों को साहित्य के लिए आवश्यक माना है, और इनकी दो कोटियाँ तय की है!—

(i) प्रवृत्ति पर आधारित
(ii) निवृत्ति पर आधारित

प्रवृत्तिमूलक मनोवेग जीवन की सहज आकांक्षाओं से जुड़े हुए होते हैं। और निवृत्तिमूलक संवेगों में घृणा इनके परस्पर, कुत्सा, निर्वेद जैसे संवेग आते हैं। इनमें परस्पर संघर्ष की दशा भी देखी जाती है यह मनोदशा अधिकार और कर्तव्य के बीच भी (संघर्ष) द्वन्द का रूप ले सकती है।

आई० ए० रिचर्ड्स ने अपने संवेग से संबंधित सिद्धान्तों का वर्णन करते हुए लिखा है— " कोई वस्तु जो किसी आकांक्षा विशेष की तुष्टि करे और उससे अधिक की मांग न करे, मूल्यवान होती है इसलिए किसी भी व्यक्ति द्वारा आकांक्षाओं की प्राथमिकता पर आधारित भाव की अभिव्यक्ति को संवेग सिद्धान्त के अन्तर्गत परखा जाना चाहिए। यही प्रमुख प्रेरणा नैतिकता की दृष्टिकोण से मूल्यवान होते हैं, और इसकी सम्प्रेषणीयता के बाद गौण मनोवेगों का स्वतः शमन हो जाता है।"

इसलिए आई० ए० रिचर्ड्स अपने समय के समाज में फैले हुए नैतिक आग्रहों या पुराग्रहों तथा अंधविश्वासों के पीछे मनोवेगों की प्रधानता को स्वीकार करते हैं और उनका मानना है कि युग धर्म बदलता चला जाता है लेकिन नैतिक आदर्श या नियम उतनी तेजी से नहीं बदलते इसीलिए साहित्यकार या कलाकार का पहला धर्म है — इन अनुभूतियों को समेटना जिन्हें वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान समझता है। मनोवेगों को ऐसा सामंजस्य जो सामाजिक अव्यवस्था के भीतर से आंतरिक व्यवस्था को ढूंढ निकाले। और साहित्य को प्राथमिक संवेगों का उत्तराधिकार सौंपे, वही युग निर्माता होता है।

आई० ए० रिचर्ड्स ने संवेगों की परंपरा से आगे बढ़ते हुए सम्प्रेषणीयता को एक महत्वपूर्ण शास्त्रीय पक्ष घोषित किया है। मानवीय मूल्यों की कसौटी पर जो विचार या भाव संवेगों की प्राथमिकता का स्वरूप लेते हैं इन्हें प्रेषणीयता का आधार भी मिलना चाहिए। यद्यपि आई० ए० के पहले भी इस संप्रेषण शब्द की व्याख्या प्रचलित थी लेकिन उसके सम्यक अनुशीलन का अभाव था, और उसे इस शब्द को लेकर बहुत सारी भ्रांतियाँ भी फैली हुई थी — साहित्यकार की अनुभूति सहृदय के भीतर संक्रमित होती है, और इसका बड़ा सूक्ष्म और रहस्यमय आधार होता है।

Scanned with Cam

आई० ए० रिचर्ड्स ने इस तथ्य का खण्डन किया है, उन्होंने लिखा- "सम्प्रेषणशीलता कोई अलौकिक, रहस्यमय कार्य-व्यापार नहीं बल्कि मनोवेगों की सामान्य प्रतिध्वनि मात्र है। इसलिए एक विशेष परिस्थिति में नाना प्रकार के मानसिकता वाले लोग भी समान अनुभूति से जोड़ते हैं।"

भारतीय काव्य-शास्त्र में इसे रसमयता का उत्कर्ष कहा गया है। भरतमुनि ने रस के जो सूत्र दिए, उनका आई० ए० रिचर्ड्स के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक मौलिक विवेचन किया जाए तो साधारणीकरण और सम्प्रेषण दोनों में युग धर्म के अनुसार केवल शब्द भेद हैं, भाव की व्याप्ति एक है। देशकाल की भिन्नता के बावजूद दोनों शब्द साहित्य और कला में जीजिविषामूलक दृष्टिकोण लेकर आते हैं, और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आइए रिचर्ड्स जैसे पाश्चात्य समीक्षक को अपने सिद्धान्तों के सन्निकट माना है, उन्होंने सप्रमाण स्वीकार किया है कि साहित्य की शाश्वतता लोकमंगल की साधनावस्था है। हृदय की मुक्तावस्था कविता का उत्कर्ष है। और इसी धरातल पर सम्प्रेषण जैसे शब्द की समानुपातिक सार्थकता देखी जा सकती है।

आई० ए० रिचर्ड्स ने सम्प्रेषण के चार आधारभूत सिद्धान्त बताए हैं।-

(i) साहित्यकार - कलाकार की अभिव्यंजना शक्ति
(ii) सहृदय - पाठक, श्रोता, दर्शक की गुणग्राहक शक्ति,
(iii) विषय का विशिष्ट ज्ञान और
(iv) अतीतकालीन पारंपरिक अनुभव अथवा संस्कार।

Scanned with Cam

आई० ए० रिचर्ड्स ने संप्रेषण की शर्त के अनुसार विविध अनुभूतियों की आधारभूत एकता को सर्वोपरि माना है, उन्होंने स्पष्ट तौर पर लिखा है :- " किसी भी परिवेश विशेष से जब कोई व्यक्ति बौद्धिक स्तर पर प्रभावित होता है तब दूसरा व्यक्ति भी उस प्रतिक्रिया के प्रभाव से वैसी ही समान अनुभूति धारण करता है। इसलिए दूसरे की अनुभूतियों को समान रूप से धारण करना संप्रेषण है। "

इस परिभाषा के अनुसार सम्प्रेषण का सीधा प्रभाव रचनाकार और सहृदय दोनों पर पड़ता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य की शास्त्रीयता का उल्लेख करते हुए इसी विश्वसनीयता अथवा प्रामाणिकता को महत्वपूर्ण माना है। वस्तुतः श्रेष्ठ साहित्य की सच्ची विरासत वही है। जिसमें सम्प्रेषण के सेतु पर चढ़कर सारे भाव रचनाकार से लेकर सहृदय अनुभवकर्ताओं तक समान रूप से सम्प्रेषित होते हैं। इसलिए आई० ए० रिचर्ड्स ने एक महत्वपूर्ण मान्यता दी है उनके अनुसार सम्प्रेषणीयता को शायास संयोजित नहीं करने की नहीं होती! वह साहित्य अथवा कलाकार में स्वतः स्फूर्त रहती है यही कारण है कि सच्चे साहित्य का अस्तित्व कभी नश्वर नहीं होता। उसकी शब्द प्रत्यंचा अतीत तक खींचती है वर्तमान का संधान करती है और भविष्य की ओर इंगित करती है

आइ० ए० रिचर्ड्स

PAGE NO. 5
DATE / /

आचार्य शुक्ल ने जिसे लोकमंगल विधायिनी शक्ति कहा है, इसे आइ० ए० रिचर्ड्स ने अनुभूति की सामर्थ्य माना है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक है- 'व्यवहारिक आलोचना' (practical criticism) इस पुस्तक में काव्यार्थ के चार भेद बताए गए हैं:-

(i) वाच्यार्थ (sense) (ii) भाव (feeling)
(iii) वक्ता की वाणीगत चेष्टा (Tone),
(iv) अभिप्राय (Intention)

इस दृष्टि से देखा जाए तो ये चारों रूप काव्य-भाषा की प्रेषणीयता की ओर इंगित करती है, इसलिए आइ० ए० रिचर्ड्स ने चारों भेदों को काव्य की रूप संरचना की दृष्टि से अनिवार्य माना है।

आचार्य शुक्ल ने भाव तत्व को सबसे ऊपर माना है, आइ० ए० रिचर्ड्स ने इसे ही (हिन्दी का) संवेग कहा है। कुछ आलोचकों के अनुसार काव्य में भाव और शिल्प का संतुलित समायोजन होना चाहिए। आइ० ए० रिचर्ड्स ऐसे ही आलोचकों में से एक हैं। वे लिखते हैं:-

"जब कविता में किसी प्रकार की विचार, भावों का प्रभाव बढ़ाने के लिए आते हैं, तो उनकी गंभीरता, सत्यता और सार्थकता को समझते हुए मूल संवेगों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। क्योंकि संप्रेषण सदैव समान मनोदशा में होता है। इसीलिए उन्होंने सम्प्रेषण की प्रक्रिया को दो भागों में बाँटा है।—

(i) शब्दों का चाक्षुष बिंब,
(ii) दृष्टि की संवेदना में बिंब,
(iii) पूर्वो पर निर्भर उन्मुक्त बिंब,

P.T.O.

(iv) भौतिक जगत से वस्तुओं का परिज्ञान
(v) भाषा जन्य अनुभूति
(vi) दृष्टि बोध का सामंजस्य

आई० ए० रिचर्ड्स ने काव्य के आस्वाद की जिन प्रक्रियाओं का वर्णन किया है, वे भारतीय रस सिद्धान्तों से मिलते-जुलते हैं लेकिन दोनों के बीच कुछ विभाजक रेखाएँ भी हैं, जिससे पूर्व और पश्चिम का अंतर ज्ञात होता है। रिचर्ड्स ने स्थायीभावों और संचारी भावों के लिए एक ही शब्द संवेग का प्रयोग किया है। जिसका उल्लंघन होता है। वे यह भी मानते हैं कि सम्प्रेषण का चरम लक्ष्य आनंद की प्राप्ति है। लेकिन वे तात्कालिक आनंद की बात नहीं करते। भरतमुनि ने भी शाश्वत रसमयता की बात कही है, और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी मनुष्य के भावों का समाजीकरण करते हैं। तथा कविता को रागात्मक संबंधों का प्रतिफल मानते हैं। लेकिन रिचर्ड्स एक पग आगे बढ़कर भाषा की भौतिकता या शिल्प की संवेदात्मक अनुभूति का उल्लेख करते हैं। इसका कारण यह है कि वे आधुनिक मनोवैज्ञानिक के आचार्य हैं। उन्होंने नैतिक सत्य का परिहार नहीं किया है और उनके सामाजिक स्वीकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की लोकमंगल विधायिनी दृष्टि के अधिक निकट दिखाई पड़ते हैं।

आई० ए० रिचर्ड्स ने जिन मानवीय मूल्यों को उठाया है, उनको गत्यात्मक माना है भरतमुनि स्थायीभाव को गत्यात्मक नहीं मानते, संचारी भावों को मानते हैं।

DATE / /

आचार्य शुक्ल ने भी गत्यात्मकता को स्वीकार किया है लेकिन स्थायीभावों के परिवर्तन को वो भी नहीं मानते। बल्कि इन्होंने अपनी मूल दृष्टि को शाश्वतता पर टिकाए रखा है। वैचारिक गतिशीलता हो सकती है, लेकिन भावों की शाश्वतता यथावत रहती है।

नीति-तत्व को आइ० ए० रिचर्डस ने यह कहते हुए स्वीकार किया है कि साहित्य या कला अपूर्ण है यदि उसमें नैतिकता नहीं है, लेकिन वे मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के तहत विकासवाद पर भी विशेष बल देते हैं। उनका मत है कि कालक्रम के अनुसार नीतियाँ भी बदलती हैं। दूसरी ओर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी दृष्टि को भारतीय संस्कृति के उस दार्शनिक पक्ष की ओर समर्पित किया है, जिसमें सत्य शिव और सुन्दर का भाव है। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं, जो धर्म में शिव है वही काव्य में सुन्दर का भाव है। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं जो धर्म में और शिवत्व की रक्षा करना साहित्य का पहला दायित्व है। इस तरह आइ० ए० रिचर्डस और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के सिद्धान्तों में मूलभूत साम्य होने के बावजूद सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भिन्नताएँ हैं, और संप्रेषण का सिद्धान्त मूल्य के मनोविज्ञान पर टिका हुआ है इसलिए कहा जा सकता है कि अपने युगबोध के साथ जुड़कर आइ० ए० रिचर्डस जैसे पाश्चात्य साहित्य शास्त्री ने मनोविज्ञान की कसौटी पर साहित्य को परखने का प्रयास किया है, उनका साधन संवेग है और साध्य शाश्वत आनंद।